फसल कीट निगरानी एवं सलाहकार परियोजना - महाराष्ट्र, 2011

राज्य कृषि विभाग, महाराष्ट्र, पुणे द्वारा

एक सहयोगी प्रोग्राम

- समेकित नाशीजीव प्रबंधन के लिए राष्ट्रीय केन्द्र (NCIPM), नई दिल्ली
- पंजाबराव देशमुख कृषि (PDKV) विद्यापीठ, अकोला
- मराठवाड़ा कृषि विश्वविद्यालय, परभनी
- महात्मा फुले कृषि विद्यापीठ, राहुरी
- कपास अनुसंधान केन्द्रीय संस्थान, नागपुर
- सोयाबीन अनुसंधान निदेशालय, इंदौर
- केन्द्रीय शुष्क कृषि अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद

राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत महाराष्ट्र सरकार द्वारा निधिबद्ध

परिचय

Lepidopteran कीट विशेष रूप से एच. आर्मिजेरा और स्पोडोप्टेरा लिट्युरा भक्षक और प्रकृति में पोलीफेगस हैं.. महामारी उपस्थिति और फसलों की विशाल तबाही कई फसल प्रणालियों मे सामान्य लक्षण हैं. कपास में इन कीटों से होने वाली चक्रीय महामारी नियमित घटना है. महाराष्ट्र में कपास पर इन दो कीटों के कारण ९० के देर दशक में उपज में भारी नुक्सान हुआ. सोयाबीन फसल में प्रति हेक्टेयर अच्छी औसत उपज और अच्छे बाजार की कीमतों के तहत पिछले दो वर्षों में विदर्भ में सोयाबीन का क्षेत्र बढ़ गया है. कीट भी तदनुसार सोयाबीन स्थानांतरित में हो गए और स्पोडोप्टेरा लिट्युरा, एच. आर्मिजेरा व अन्य पत्ती खाने वाले केटरपिलर का प्रकोप महाराष्ट्र में विशेष रूप से विदर्भ क्षेत्र में पिछले सीजन (2008-09) के दौरान देखा गया. महाराष्ट्र में सोयाबीन के प्रमुख क्षेत्र में उपज में गंभीर हानि हुई, अकेले विदर्भ में 7.5 लाख हेक्टेयर में इसका नुक्सान देखने को मिला. एक गहन कीट निगरानी तंत्र और सलाहकार जागरूकता प्रणाली की / स्थापना कर दी जाये तो, इस तरह के एक महामारी की स्थिति पर काबू पाने में मदद मिलेगी. इसे ध्यान में रखते हुए 2009-10 में "महाराष्ट्र में कपास सोयाबीन आधारित फसल प्रणाली में प्रमुख कीटों के प्रबंधन के लिए जागरूकता व निगरानी

कार्यक्रम " अनुमोदित किया गया था और 2010-11 में यह फिर से CROPSAP के रूप में जारी रखा.

कार्य क्षेत्र

महाराष्ट्र में कपास और सोयाबीन दो प्रमुख फसलों, जिस में लगभग एक ही जैसी मिट्टी और जलवायु परिस्थितियों की आवश्यकता है .प्रत्येक राज्य में सोयबीन का लगभग ३० लाख हेक्टेयर क्षेत्र हैं. परियोजना कार्य क्षेत्र सोयाबीन पैदा करने वाले 28 जिलों को चुना गया. इस परियोजना में मुख्य जोर सोयबीन व कपास की फसल पर दिया गया क्योंकि एच. आर्मिजेरा और स्पोडोप्टेरा लिट्युरा इन फसलों पर पाए जाने वाले सामान्य कीट हैं

परियोजना की विस्तृत जानकारी के लिए लाग ऑन करें
http://www.ncipm.org.in/cropsap/login.aspx